कविता/जयपाल

मृत्युभोज

गांव का एक आदमी था
वक्त का मारा हुआ।
अति गरीबी का सताया
जिंदगी हारा हुआ।।

डाल ली थी झोपड़ी
बनवा सका जो घर न था।
मजबूर था केवल बिचारा
खेत बीघा भर ना था।।

फिर भी था समझता
खुशहाल अपने आप को।
देवता की भांति ही था
पूजता निज बाप को।।

किन्तु ऐसा रूप भी तो
वक्त सह पाया नहीं।
ठोकर लगी ऐसी कि वो
खुशहाल रह पाया नहीं।।

दुख भरे दिन और भी
उसके दुरासी हो गए।
उठ गया साया पिताजी
स्वर्ग वासी हो गए।।

अंत्येष्टि कैसे हो पिता की
लग रही मन में शर्म।
गांव वालों की मदद से
हो सका क्रिया कर्म।।

जलती चिता में लख पिता को
आत्मा भी छठपटाई।
आग धू-धू जल रही थी
जो कि ठंडी हो न पाई।।

सोचता मन में न जाने
और कितना दुख पड़ेगा।
गांव वालों ने कहा
तू तेरवीं कितनी करेगा।।

गिड़गिड़ा कर बोला
बेमौत मैं मर जाऊंगा!
मुझको क्षमा कर दीजिए
मैं यह नहीं कर पाऊंगा!!

खाने वालों ने कहा
कलुआ न बिल्कुल डर रहा।
कितना अधर्मी है अभागा
तेरवीं ना कर रहा।।

स्वर्गवासी बाप की ना
गांव में कोई जिक्र थी।
पेट भरने के लिए बस
पूड़ियों की फिक्र थी।।

तूल इतना दे रहे थे
लोग इस कुविधान को।
फैसला करना पड़ा फिर
गांव के प्रधान को।।

माना कि ये कलुआ तुझे
मिलती है रोटी तक नहीं।
लेकिन परंपरा तोड़ने का
है किसी को हक नहीं।।

कलुआ अगर कतराएगा
तो बात आगे ही बढ़ेगी।
बेशक तू है गरीब पर
तेरवीं तो करनी पड़ेगी।।

उस दिवस वह बहुत रोया
लोग लेकिन माने नहीं।
पैदाइशी मजदूर था
घर अन्न के दाने नहीं।।

परंपरा के फेर में उसका
बहुत हर्जा हो गया।
हट गई छाया पिता की
और कर्जा हो गया।।

लोग पत्तल पर जमे थे
खिल रहे थे प्रसून से।
खा रहे थे पूड़ियाँ
सेंकी गईं जो खून से।।

आ रहे थे खा रहे थे
झोपड़ी पर पहुंचकर।
खा रहे हों गीध जैसे
मांस उसका नोच कर।।

तेरवीं के काज से भर
जिंदगी को फँस गया।
फिक्र करता कर्ज की
कलुआ जमीं में धँस गया।।

उड़ गए उसके प्राण पंछी
सोच इतना बढ़ गया।
अच्छा भला एक आदमी
बलि तेरवीं की चढ़ गया।।

मौत से जो हो दुखी
उसको दुखाना पाप है।
तेरवीं का अन्न खाना
समझ लो अभिशाप है।।

ऐसे कलुआ बहुत हैं
जिनको भारी कष्ट है।
व्यर्थ जिनका हो रहा
धन तेरवीं में नष्ट है।।

जान की तो जान जाए
और हों बर्बादियाँ।
कसम खा लो बन्धुओ!
अब दादा मरें या दादियाँ।।

मृत्युभोज करके हम
विपत्ति को पुकारेंगे नहीं।
खुद कुल्हाड़ी पांव में
अब कभी मारेंगे नहीं।।

बंधुवर सब एक होकर
इस प्रथा को तोड़ दो।
आँसुओं से भींगा हुआ
अपवित्र भोजन छोड़ दो।।

इसलिए अनुरोध है
ऐसा कर्म कोई ना करे।
जिससे हमारे बीच का
कोई और कलुआ ना मरे।।

कोई और कलुआ ना मरे।
कोई और कलुआ ना मरे।।

नाजी दौर की तरह सरकार की विचारधारा का समर्थन करने वाली प्रोपेगैंडा फिल्में बना रही है फिल्म इंडस्ट्री

"फिल्म इंडस्ट्री को अब सरकार की ओर से विचार के समर्थन वाली फिल्में बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसी फिल्मों को बनाने के लिए फंड भी दिया जाता है जो सरकार के विचारों का समर्थन करती हों। उन्हें क्लीन चिट का भी वादा होता है और वो प्रोपेगेंडा फिल्में बनाते हैं।" उपरोक्त टिप्पणी दिग्गज अभिनेता नसरुद्दीन शाह ने वर्तमान हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को लेकर एनडीटीवी से कही है।

इतना ही नहीं उन्होंने आगे कहा कि नाज़ी जर्मनी के दौर में दुनिया को समझने वाले फिल्मकारों को घेरा गया है और उनसे कहा गया कि वे ऐसी फिल्में बनाएं, जो नाज़ी विचारधारा का प्रचार करती हों। दिग्गज फिल्म अभिनेता ने आगे कहा कि मेरे पास इसके पक्के सबूत नहीं हैं, लेकिन जिस तरह की बड़े बजट वाली फिल्में आ रही हैं, उससे यह बात साफ़ है।

एनडीटीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में 'क्या उनके साथ फिल्म इंडस्ट्री में कभी भेदभाव हुआ है' इस सवाल के जवाब में अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने कहा कि, 'इस इंडस्ट्री में आपकी इज़्ज़त आपके पैसों को देखकर की जाती है। आज भी इंडस्ट्री के तीन खान अभिनेता टॉप पर हैं। उन्हें चुनौती नहीं दी जा सकती और आज भी वो सबसे ऊंचे स्थान पर हैं। मैंने इंडस्ट्री में कभी भेदभाव महसूस नहीं किया'।

एनडीटीवी के साथ इंटरव्यू में उन्होंने आगे कहा कि, "जब मैं करियर की शुरुआत कर रहा था तो मुझे भी नाम बदलने की सलाह दी गई थी लेकिन मैंने नाम नहीं बदला। उन्होंने कहा कि "मुझे नहीं लगता इससे कोई खास अंतर पैदा हुआ होगा"।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मुस्लिम

नेता यूनियन के सदस्य और छात्र जब कोई बयान देते हैं तो उनका विरोध किया जाता है वहीं जब कोई मुस्लिम समुदाय के खिलाफ़ कोई हिंसक बयान दिया जाता है तो उस तरह का शोर नहीं दिखता है। यही नहीं उन्होंने कहा कि मुझे तो बॉम्बे टू कोलंबो और कोलंबो टू कराची की टिकट भी भेज दी गई थी।

उन्होंने आगे कहा कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री इस्लामोफिबिया से ग्रसित है। सबसे बड़ी बात कि सरकार की ओर से फिल्म मेकर्स को ऐसा सिनेमा तैयार करने के लिए प्रोत्साहन भी मिल रहा है।

इंडस्ट्री में हुए भेदभाव के सवाल पर अभिनेता ने कहा कि, 'मैं नहीं जानता कि फिल्म इंडस्ट्री में मुस्लिम समुदाय के साथ कोई भेदभाव किया जा रहा है या नहीं। मैं मानता हूं कि हमारा योगदान अहम है। इस इंडस्ट्री में पैसा ही भगवान है'। नसीरुद्दीन ने आगे ये भी कहा कि, 'तालिबान को लेकर भारत ही नहीं दुनिया में मुस्लिमों के एक वर्ग द्वारा समर्थन दिए जाने या कथित तौर पर खुशी जताए जाने के बयान को गलत तरीके से पेश किया गया था'।

अभिनेता ने एक वाकया साझा करते हुये बताया कि उनकी पत्नी रत्ना पाठक शाह, जो खुद एक प्रशंसित अभिनेत्री हैं, ने अपने बच्चों से कहा कि तुमसे जब कोई यह पूछे कि तुम किस धर्म का पालन करते हो तो कहना "भेलपुरी"।

उन्होंने आगे कहा कि "मैं अपने बारे में चिंतित नहीं हूं, मुझे बच्चों की चिंता है।"

संस्था चाहती है कि हम डरें। वे चाहते हैं कि हम डर की भावना में आएं। मुझे कभी भी शारीरिक हिंसा की धमकी नहीं दी गई। मेरी सहानुभूति उन लोगों के साथ है जो अक्सर बिना सबूत के लिंचिंग, गोहत्या के आरोपों का सामना करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि "यह और भी चिंताजनक है कि नुकसान पहुंचाने वालों को अक्सर बधाई दी जाती है।"

तालिबान के समर्थन में बोलने वालों को खुद द्वारा आड़े हाथ लेने के दृष्टिकोण पर उन्होंने एनडीटीवी से कहा कि उन्हें उस समय जो लगा वह उस समय कहा जाना था। जंगल की आग फैलने में समय नहीं लगती। इस तरह के विचारों को लोगों के दिमाग में घुसने में समय नहीं लगता है। अधिकांश लोग सुधारों को लेकर परेशान थे और इसने मुझे और भी परेशान किया। वे आधुनिकता के विचार के ख़िलाफ़ हैं।

उन्होंने आगे कहा कि "भारतीय इस्लाम से मेरा मतलब था सहिष्णु सूफी से था जिसने इस देश में इस्लाम की प्रथा को प्रभावित किया। मैं सलीम चिश्ती और निजामुद्दीन औलिया जैसे लोगों द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए इस्लाम की बात कर रहा था।"

दुनिया में जितने नशे हैं, उनमें सबसे तीखा है-सत्ता का नशा

सत्ता की खुमारी, सत्ता प्रतिष्ठान से जुड़े हर शख्स में बहुत देर तक रहती है। आप किसी चपरासी से लेकर बड़े बाबू से होते हुए पुलिस, क़ाज़ी, सचिव, मंत्री या महामहिम किसी के भी मुँह के पास अपना मुँह लेकर जाएं तो एक जैसी ही तेज़ दुर्गंध पाएँगे। जैसे सबने किसी एक ही ब्रांड की लगाई हुई हो। कोई लड़खड़ा रहा है, कोई गालियाँ बक रहा है तो किसी की आँखों के लाल-लाल डोरों से आप उसकी खुमारी का अंदाज़ा लगा सकते हैं।

सत्ता की दूसरी खूबी ये है कि इसे हासिल करने के तुरंत बाद ही इसके चले जाने का ख़ौफ़ तारी हो जाता है।जैसे-जैसे खुमारी बढ़ती है, वैसे-वैसे ख़ौफ़ और ज़्यादा गहराता जाता है। सुरक्षा के घेरे और ज़्यादा मज़बूत और ऊँचे कर दिए जाते हैं, इतने कि घेरों के उस पार देखना नामुमकिन हो जाता है। सड़क किनारे ठेले पर गोलगप्पों का लुत्फ़ लेता हुआ शायर कह उठता है- "दूर काली बिल्लियों के बीच सहमा जा रहा है, एक राजा नग्न, चिंतामग्न।"

आपने कलंदरों की मस्ती और शाहों के ख़ौफ़ की कितनी ही कहानियाँ सुनी होंगी। पहली-पहली बार राज्य का ख़याल जब आया होगा तो ये फिक्र रही होगी कि लकड़बग्घे, दूसरे जंगली जानवर या दुश्मन कबीले के लोग रात-बिरात हमला करके लोगों के जानमाल को नुक़सान न पहुँचा सकें। इसीलिए सबने अपनी थोड़ी-थोड़ी आज़ादी और एक-एक कटोरी चावल देकर एक शख्स को निगरानी पर लगा दिया, जो और थोड़े से लोगों को अपने साथ लेकर दिनरात बाहरी लोगों और जानवरों

पर नज़र रखता होगा।

बस इसके बाद हालात बदलने लगे।चौकीदार ने कुछ दिन तो चौकस चौकीदारी की, उसके बाद वह मुफ़्त की दाल और सत्ता ब्रांड दारू का आदी हो गया।कबीले में इक्के-दुक्का हादसे हुए तो चौकीदार से पूछगछ हुई।चौकीदार बहाने बनाने लगा। कभी हथियारों की कमी का बहाना, कभी दुश्मनों की ताक़त और तादाद का बहाना।लोगों ने थोड़ा और पैसा और कुछ और सामान इकट्ठा करके दे दिया।हालात फिर भी नहीं बदले।तो कबीले के कुछ दूसरे लोग सामने आने लगे-"तुम हटो, हम करेंगे चौकीदारी"।

चौकीदार के लिए ये और भी बड़ा ख़तरा था, चौकीदारी छिन जाने के ख़ौफ़ ने उसकी नींद उड़ा दी। चौकीदार चौबीस घंटों में बस एक या दो घंटे की ही उचकती हुई नींद ले पाता था। अब उसे कबीले के ही हर शख़्स से डर लगने लगा।उसे लगता जैसे सब लोग उसके खिलाफ़ साजिश करने में लगे हुए हैं। उसने सबके ऊपर एक-एक जासूस बिठा दिया। लेकिन इससे भी चौकीदार के मन का ख़ौफ़ कम नहीं हुआ। दरअसल इस सबसे ख़ौफ़ और बढ़ने लगा। चौकीदार विक्षिप्त होने लगा क्योंकि नये-नये दावेदारों की तादाद हर रोज़ बढ़ती ही जा रही थी। लोगों के बीच से ही उठा एक शख्स उन्हें दिन-रात डरा रहा था जो किसी भी जंगली जानवर से ज़्यादा ख़ूंखार और वहशी था, जिसने हमदर्दी का मुलायम और ख़ूबसूरत लबादा ओढ़ लिया था। चौकीदार ने अपने लिए एक से बढ़कर एक ख़ूबसूरत बहुत से लबादे तैयार करवाए जिन्हें वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद बदल देता था। इन लबादों को महंगे इत्र में डुबोया जाता था जिससे सत्ता ब्रांड की शराब की दुर्गंध को कम किया जा सके। लेकिन दुर्गंध और ज़्यादा तीखी होती जाती थी। नागरिकों में असुरक्षा और भय का भाव पहले से भी अधिक बढ़ने लगा था। अपने बुनियादी मक़सद में राज्य फेल हो चुका था।

-श्रीकांत